Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 2, Issue - 6, Nov-Dec – 2019
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 1.847
Received on : 11/12/2019 Accepted on : 23/12/2019 Publication Date: 30/12/2019

अस्मिता संघर्ष में स्त्री की भूमिका : कल और आज

[1.] डॉ. राजेश श्रीवास **[2] डॉ. राजेश्वरी चन्द्राकर**
[1] विभागाध्यक्ष हिन्दी, सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय, नवापारा राजिम , रायपुर (छ.ग.)
[2] सहा. प्रा., हिन्दी, सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय, नवापारा राजिम , रायपुर (छ.ग.)
Email - [1] dr.rajeshshrivas@gmail.com [2] drrajeshwarichandrakar@gmail.com

"जितने आत्मविश्वास से
धरती पर पॉव रखते हो तुम
उतने ही आत्मविश्वास से
धरती पर चल नहीं पाती हूँ मैं
जिस आत्मविश्वास से चलते हो तुम गर्वोन्नत
उसी आत्मविश्वास से
क्यों नही सिर उठा पाती हूँ मैं?
तुम करके अनगिनत अपराध
जी लेते हो एक सम्मानित जीवन
और तरेरते हो ऑखें
सच के सूरज की
पर बिना किए कोई अपराध
एक अपराध.बोध जीती हूँ मैं।"1

प्रभा दीक्षित की कविता की यह पंक्तियॉ नारियों की वास्तविक स्थिति का बखान करती -सी प्रतीत होती है। स्त्री अस्मिता का संघर्ष क्या है? आखिर इस देवी देवताओं के देश में स्त्री को अपने अस्मिता की लड़ाई क्यों लड़नी पड़ रही है। क्यों आज स्त्रियॉ अपने ही घर में,अपने ही लोगों के बीच अपने अधिकारों के लिए जूझ रही है? ऐसे कई प्रश्न हैं, जो आज इस आधुनिक परिवेश में हमें मुँह चिढ़ा रहे हैं। जल,थल,अग्नि,गगन तथा पवन इन्ही पंचतत्वों को मिलाकर ही सृष्टिकर्ता ने उसे भी रचा है। उसके सुंदर सपने भी उम्मीद भरे आकार ग्रहण करते है। वह भी अनुभूतियॉ की मधुरतम सुगंध से सराबोर होना चाहती है। महत्वाकांक्षा की आम्रमंजरियॉ उसके भी मन उपवन को महकाना चाहती है किंतु यथार्थ. .....? यथार्थ इन सब से परे हैं।

प्राचीन काल में ऐसी स्थिति नहीं थी। प्राचीन काल में नारी को उच्चस्थान प्राप्त था। परिवार मातृसत्तात्मक रूप में था। वैदिक युग में नारियों की स्थिति जितनी ऊँची थी उतनी बाद में कभी नही रही। इस समय स्त्रियॉ पुरूषों की तरह उच्च शिक्षा ग्रहण करती थी। परिवार में स्त्रियों की बड़ी प्रतिष्ठा थी। परंतु उत्तर वैदिक काल के आते आते नारी की दशा में अंतर आ गया था। समाज पैतृक प्रधान हो गया है। बहुविवाह,बालविवाह, पर्दाप्रथा, सतीप्रथा न जाने कितनी प्रथाओं, रीतियों की बोझ अकेली स्त्री पर डाल दिया गया। अंग्रेजों के आने के बाद एक ओर तो उसे कुछ कुरीतियों से छुटकारा मिला तो दूसरी ओर आत्मरक्षा जैसे कई नए प्रश्नों ने उसे घेर लिया। इस प्रकार समय बदलने के साथ साथ स्त्रियों की स्थिति में भी बदलाव आता गया।

आज स्त्रियॉ अपनी अस्मिता को बरकरार रखने में लगी हुई हैं। घर के चार दिवारी से बाहर निकालकर वो समाज के सभी क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। उदाहरण के लिए विमान के क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में, बैंक व्यवसाय के क्षेत्र में, राजनीति में आदि। कई उल्लेखनीय नाम इस प्रकार हैं जिन्होनें ' नारी ' संज्ञा को गौरवान्वित किया है रानी लक्ष्मीबाई, किरण बेदी, लता मंगेशकर, इंदिरा गांधी, मदर टेरेसा, साइना नेहवाल, कल्पना चावला आदि।

आज स्त्रियॉ पुरूषों के साथ -साथ कदम से कदम कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। आज प्रत्यके क्षेत्र में वे स्वयं को पुरूषों से कहीं बेहतर व कुशल साबित कर रही हैं लेकिन इसके बाद भी आज उनका जन्म अभिशाप माना जाता है। इसे कभी जन्म के बाद तो कभी गर्भ में ही समाप्त कर दिया जाता है और यदि जीवन मिला भी तो घुटन और जिल्लत से भरा जीवन। नारी की इस स्थिति का कुछ हद तक जिम्मेदार हमारे रीति रिवाज भी है। हिंदु रीति रिवाज के अनुसार पिंड दान करने का अधिकार, अग्निदाह जैसे कई रीति का अधिकारी केवल पुरूष उत्तराधिकारी ही होता है। जिससे परिवार में पुत्र मोह जागृत होना स्वाभाविक है और इसी रीति ने कन्या भ्रुण हत्या जैसे चिकित्सिय अपराध को जन्म दिया।

कन्या भ्रुण हत्या जन्म से पहले लड़कियों को मार डालने की क्रिया है। भारत में लिंगानुपात पर दृष्टि डालें तो 1901 में 972 लड़कियॉ प्रति 1000 लड़के पर थी जबकि जनगणना 2001के आकड़ों के अनुसार स्त्रियों की संख्या 933 प्रति एक हजार पुरूष पर रह गयी है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि महिलाओं की संख्या कैसे दिनोदिन घटती जा रही है। यह वास्तव में विडंबना है कि हमारे देश के सबसे समृद्ध राज्यों पंजाब, हरियाणा, गुजरात और दिल्ली में लिंगानुपात सबसे कम है। देश की जनगणना 2001 के अनुसार 1000 बालकों में बालिकाओं की संख्या पंजाब में 798, हरियाणा में 819, और गुजरात में 883 हैं जो एक चिंता का विषय है। आज ' देवी ' दुख दिक्कत में है। उसका अस्तित्व खतरे में है। सभ्य समाज से अस्तित्व के लिए लड़ना पड़ रहा है, जो उसे पूजता है। पाखंडी व आडम्बरी समाज अपनी जननी को ही जड़ों से उखाड़ फेंकने पर आया है। बेटी को पराई कहने वालों ने कभी उसे हृदय से स्वीकार किया ही नही। कन्यादान करने वालों ने भी उसके दर्द को पहचाना नहीं। कुछ अन्य राज्यों ने इस अपराध को रोकने के लिए अनेक प्रभावकारी कदम उठाए, जैसे गुजरात में 'डिकरी बचाओ अभियान' चलाया जा रहा है। अन्य राज्यों में इस तरह की कई योजनाएँ चलाई जा रही हैं। देश की पहली महिला राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल ने पिछले वर्ष महात्मा गांधी के 138 जयंती के मौके पर केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की 'बालिका बचाओ योजना' (सेव द गर्ल चाइल्ड) को लॉच किया था। हिमाचल प्रदेश जैसे छोटे राज्यों में लिंग अनुपात में सुधार और कन्या भ्रुण हत्या रोकने के लिए प्रदेश सरकार ने एक अनूठी योजना तैयार की है। इसके तहत कोख में पल रहे बच्चे का लिंग जॉच कर उसकी हत्या करने वाले लोगों के बारे में जानकारी देने वालों को दस हजार रूपए की नगद इनाम देने की घोषणा की गई है। इन सारे अभियानों के होने के बाद भी प्रसूति पूर्व जॉच तकनीक अधिनियम 1994 को सख्ती से लागू किए जाने की जरूरत है।

कहा जाता है परिवार रूपी गाड़ी के दोनों पहिए सुगमता से चलते रहें तो गाड़ी रूकेगी नहीं । पति और पत्नी परिवार रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं जिन्हें मिलकर गाड़ी को खीचना होता है। सारी परंपरा,नैतिक मूल्यों की जिम्मेदारी स्त्रियों को ही संभालनी पड़ती है।

" वे सहती हैं
सास ससुर, देवर, जेठ और ननदों के
सौ - सौ नखरे
रखती हैं करवा चौथ का व्रत
मनाती हैं मनौती
सुरक्षित जीवन के लिए।
फिर भी कभी.कभी जल जाती हैं
स्टोव के फटने के साथ। " 2

स्त्रियॉ परिवार में विभिन्न रूपों में मॉ, पत्नी, बेटी, बहन की भूमिका निभाती हुए परिवार को संभालती आई है आज पारंपरिक छबियों से बाहर निकलकर नारी ने कई अन्य क्षेत्रों में अपने कदम बढ़ाए है। मीडिया, फिल्म जगत व सौंदर्य प्रतियोगिता आदि कई नवीन क्षेत्र हैं जिनमें नारियों की उपस्थिति ने धूम मचा रखा है।

आज स्त्रियॉ जागरूक हो गई हैं तथा महिला सशक्तिकरण की ओर बढ़ रही हैं। महिला सशक्तिकरण से आशय यह कभी नहीं होना चाहिए कि महिला या पुरूष प्राकृतिक नियम को बदल देंगे। प्रकृति ने नर और नारी दोनों को अलग-अलग बनाया है इसलिए कि दोनों प्राकृतिक नियमों के अनुसार अपना -अपना काम करेंगे। लेकिन यह आवश्यक हैं कि दोनों में पारस्परिक सहयोग बना रहे। दोनों में से कोई एक दूसरे को हेय दृष्टि से नहीं देखे और न ही वे एक दूसरे को अपमानित करे। दोनो के लिए एक दूसरे का सम्मान आवश्यक है। लेकिन यह सम्मान प्रेम पूर्ण होना चाहिए। नारी सशक्तिकरण आंदोलन चलाने वाले लोग यह भूल जाए कि नारी सशक्तिकरण का अर्थ पुरूष प्रधान समाज को समाप्त कर नारी प्रधान समाज स्थापित करना है। उन्हें हमेशा यह बात याद रखनी होगी कि समाज न पुरूष प्रधान हो न नारी प्रधान। बल्कि समाज ऐसा हो जिसमें नर-नारी सामंजस्य बना कर रहें और न तो नर -नारी के सिर पर पैर रखकर चले और न ही नारी नर को कुचलने के लिए प्रयासरत हो इसी में समाज की भलाई है। और यही है नारी सशक्तिकरण का मूलमंत्र।

"पाती है तब कितना गौरव,
कितना सुख, कितना संतोष।
स्वालंब की एक झलक पर,
न्यौछावर कुबेर का कोष। "3

गुप्त जी यह पंक्ति स्पष्ट करती है कि जब तक स्त्रियॉ अपने पैरों पर खड़ी नहीं होगी समाज में उसका षोषण होता रहेगा।

स्त्री अस्मिता के संघर्ष के सबसे महत्वपूर्ण कदम 'महिला दिवस' के रूप में हम देख सकते है। अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में हम देख सकते है। अंतराष्ट्रीय महिला दिवस '8 मार्च ' को प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इस दिन संपूर्ण विश्व की महिलाएँ देश जात पात, भाषा, राजनीतिक, सांस्कृतिक भेदभाव से परे एक जुट होकर इस दिन को मनाती है। इतिहास के अनुसार समानाधिकार की यह लड़ाई आम महिलाओं द्वारा शुरू की गई थी। प्राचीन ग्रीस में 'लीसिसटाटा' नाम की एक महिला के एक समूह ने वरसेल्स ने इस दिन एक मोर्चा निकाला। इस मोर्चे का उद्देश्य युद्ध की वजह से महिलाओं पर बढ़ते हुए अत्याचार को रोकना था। सन् 1909 में सोशलिस्ट पार्टी ऑफ अमेंरिका द्वारा पहली बार पूरी अमेरिका में 28 फरवरी को महिला दिवस मनाया गया। सन् 1910 में सोशलिस्ट इंटरनेशनल द्वारा कोपेनहेगेन में महिला दिवस की स्थापना हुई। अब 8 मार्च को महिला दिवस लगभग सभी विकसित, विकासशील देशों में मनाया जाता है। यह दिन महिलाओं का उनकी क्षमता, सामाजिक,राजनैतिक व आर्थिक तरक्की दिलाने व उन महिलाओं को याद करने का दिन है जिन्होनें महिलाओ को उनके अधिकार दिलाने का अथक प्रयत्न किए।

आखिर ऐसा क्या चाहा है उसने इस समाज से जो वह देने में सक्षम नहीं है। सहारा, सुविधा, संसाधन, और सहायता, नहीं उसने हमेशा एक सुंदर, संस्कारिक, उच्च मानवीय दृष्टिकोण वाला सभ्य परिवेश चाहा है। अपनी सहृदयता से उसे नैतिक संबल व सुअवसर दीजिए कि वह सिद्ध कर सके अपने व्यक्तित्व को, अपनी विशिष्टता को। वह समाज में अपना वजूद चाहती है, एक पहचान चाहती है जो उसकी अपनी हो। इसलिए स्त्री अपने अस्मिता के लिए संघर्ष करती हुई नारी सफलता पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह करती है।

" यह दुनिया तुम्हारी है
उसमे तुम स्वेच्छा से जियो
यह दुनिया एक नदी है
उसमें तुम स्वेच्छा से तैरती रहो
यह संपूर्ण आकाश तुम्हारा है
उसमें तुम स्वेच्छा विचरण करती रहो
यह जीवन तुम्हारा हो
दरअसल तुम्हारा ही है
तुम जैसी इच्छा हो, जियो
नारी! तुम अपना हक
खुद हासिल करो।" 4

संदर्भ ग्रंथ :

(1) डॉ. विनय कुमार पाठक – स्त्री – विमर्श – पृष्ठ -26 – 27.
(2) हरजिन्दर सिंह सेठी - यह चुप रहने का समय नहीं - पृष्ठ -16.
(3) मैथलीशरण गुप्त - पंचवटी - पृष्ठ -17.
(4) डॉ. विनय कुमार पाठक – स्त्री – विमर्श – पृष्ठ -232.